झील के ऊपर अगहन माह के मेघ

गिरेंद्र सिंह भदौरिया

नील गगन में रुई सरीखे फाहों के अम्बार लगे।
हे अगहन में दिखे मेघ! तुम हिम से लच्छेदार लगे।
निर्मल धवल कीर्ति के बेटे नभ के नव सरदार लगे।
पूरा जल कर चुके दान तुम फिर भी पानीदार लगे।

नीचे झील, झील का पानी दर्पण का आकार लगे।
सुगढ़ दूधिया इस दर्पण में जल घन एकाकार लगे।
निराकार से अजल सजल तुम प्रकट रूप साकार लगे।
सच पूछो तो श्वेत पटों से सजे हुए दरबार लगे।

बीच बसी है निर्जन बस्ती सूने घर संसार लगे।
तुम्हें बसाना चाह रहे हैं शायद यह आभार लगे।
इसीलिए सारे रहवासी छोड़ चुके घर बार लगे।
कर्ज चुकाने की चाहत में उसी झील के पार लगे।

मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्नाः

इस दुनिया में कई हमारा मनरखने वाले भी हैं।
परघर आग लगाकर खुद दुख में दुखने वाले भी हैं।।

गलत बात को सही तरीके से कहने वाले भी हैं।
सही बात को ग़लत तरीके से सहने वाले भी हैं।।

ग़लत बात को ग़लत तरीके से चुनने वाले भी हैं।
सही बात को सही तरीके से गुनने वाले भी हैं।।

सही बात को कहने से पहले डरने वाले भी हैं।
ग़लत बात पर जान बूझ कर मर मिटने वाले भी हैं।।

सही ग़लत को मिला-जुला कर दम भरने वाले भी हैं।
ग़लत सही का समय देखकर हित हरने वाले भी हैं।।

बिना बात के जबरन अपना रुख रखने वाले भी हैं।
बात-बात पर मौनव्रती से नित मिलने वाले भी हैं।।

अलग-अलग मुण्डों के स्वामी अति लुटने वाले भी हैं।
इस दुनिया में एक तरह की रट रटने वाले भी हैं।।

इसीलिए हे धनी पाठको! उलझ न जाना उलझन में।
समय हाथ से निकल जायेगा लगे रहोगे सुलझन में।।

सोच समझ कर करो भरोसा स्वयं लक्ष्य सन्धान करो।
निकल पड़ो अपने विवेक पर हर युग का कल्याण करो।।

गिरेंद्र सिंह भदौरिया